International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संस्कृत साहित्य में निहित जीवन मूल्य

- डॉ0 बिहारीलाल मीना
व्याख्याता - संस्कृत
राजकीय महा वद्यालय, गंगापुर सटी

प्रस्तावना

मूल्यों का मानव जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। मूल्य व्यक्ति का चरित्र निर्माण करते है, उसे संसार के अन्य प्रा णयों से श्रेष्ठ बनाते हैं व उसका समाज में स्थान निर्धारित करते है। ये जीवन मूल्य मानव-जीवन को सुखद , सरस एवं आनन्दमय बनाते है। महाक व भतृहरि ने मूल्य वहीन व्यक्ति को पशुतुल्य बताया है।[१]

साहित्य और मूल्यों का अटूट सम्बन्ध है। साहित्य सौन्दर्य का सृजन व समाज का मार्गद र्शन करता है। उसमें प्रतिबिम्बित मूल्य रचनाकार के अनुभूत सत्य होते हैं। अतः जीवन में साहित्यिक मूल्यों की अत्यन्त उपादेयता है। संस्कृत साहित्य में ऐसे उत्कृष्ट जीवन मूल्यों का व शाल भण्डार मलता है। आज के भौतिकतावादी युग में मूल्यों का क्षरण एक बड़ी समस्या है। तकनीकी वकास व आ र्थक प्रगति की अँधी दौड में मूल्य कही गुम हो रहे हैं। ऐसे में संस्कृत साहित्य में निहित जीवन-मूल्यों पर शोध अत्यन्त प्रासं गक हो जाता है।

संस्कृत साहित्य में निहित जीवन मूल्य

भारतीय चंतन और पुरातन साहित्य में धर्म के तत्त्वों को ही जीवन मूल्य माना गया है। मनु [२] और भतृहरि [३] मानवीय गुणों को ही मूल्य मानते हैं। रामधारी संह दिनकर के अनुसार , "व्यक्ति के सदगुण एवं सदव्यवहार ही जीवन मूल्य हैं।"[४]

दया, दा क्षण्य, उदारता, सत्य, परोपकार, सहिष्णुता, संवेदना, करूणा आदि अनेक जीवन मूल्य हैं, जिनसे सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य भरा पडा हैं । वेद , स्मृतियां, पुराण, रामायण, महाभारत, महाकाव्य और कथा साहित्य संस्कृत साहित्य में जीवन मूल्यों के प्रमुख स्त्रोत है। यहां संस्कृत साहित्य में निहित जीवन मूल्यों पर दृष्टांत रूप में वचार करना समीचीन होगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय साहित्य में वेदों का अ द्वतीय स्थान है। वैदिक साहित्य का वकास सामान्यत : २००० ईस्वीं पूर्व से ८०० ईस्वीं पूर्व तक माना जाता है। वैदिक साहित्य मनुष्य के कर्तव्यों का मूल है वेद में सम्पूर्ण ज्ञान निहित है।[५] दृष्टांत रूप में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

वेद कहता है क ईश्वर सम्पूर्ण चर अचर वश्व में व्याप्त है अत: समस्त प्रा णयों में एक आत्मा है।[६] अतः वेद सभी प्रा णयों को मैत्री-भाव से देखने की दृष्टि प्रदान करता है:-

" मत्रस्याहं चक्षुषा सर्वा ण भूतानि समीक्षे।"[७]

वेदार्थ का सरल भाषा में ववेचन करने वाले ग्रन्थ स्मृति साहित्य हैं। स्मृतियों में भी प्रचूर मात्रा में जीवन मूल्यों का निरूपण हुआ है। मनुस्मृति में धर्म के १० लक्षण बताये गये हैं :- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, वद्या, सत्य और अक्रोध।[८]

पौरा णक साहित्य में भी भारतीय जीवन मूल्यों का सुन्दर वर्णन मलता हैं। भागवत पुराण में तीस प्रकार के जीवन मूल्यों का आचरण सभी मनुष्यों का कर्तव्य बताया गया हैं। वे जीवन मूल्य हैं :- सत्य, दया, तपस्या, शौ च, तितिक्षा, उ चत-अनु चत का वचार , संयम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, त्याग, स्वाध्याय, सरलता, सन्तोष सेवा , श नै: श नै: भोगों से निवृत्ति , कर्तव्या भमान का त्याग , मौन आत्म चंतन, न्यायपूर्ण वतरण, प्रा णमात्र के प्रति आत्मीयता, भगवद्भक्ति एवं उनके प्रति समर्पण।[९]

वाल्मी क ने रामायण में जीवन के आद र्शभूत और शाश्वत मूल्यों का निर्दे श कया है। रामायण पतृभक्ति, पुत्र-प्रेम, भातृस्नेह, स्वामीभक्ति, राज्यपद के प्रति अना शक्ति, प्रजारंजन, सदाचार एवं सत्यप्रतिज्ञा के जीवन मूल्यों का आदर्श प्रस्तुत करती है। जैसे राम के भातृप्रेम की सरल अ भव्यंजना:-

देशे देशे कलत्रा ण, देशे देशे च बान्धवा:।

तं तु देशे न पश्या म, यत्र भ्राता सहोदर:।।[१०]

'पत्नी तो संसार में कही भी मल सकती है, कन्तु सगे भाई अन्यत्र कहीं नहीं मलते।'

संस्कृत महाकाव्यों एवं नाटको में भी यत्र -तत्र भारतीय जीवन मूल्य वखरे पडे हैं। संस्कृत सुक्तियां अत्यन्त ही मूल्यपरक हैं, जिनमें वै वध्यपूर्ण वषयों की भरमार है। अ भज्ञानशाकुन्तलम में वाह उपरान्त कण्व ऋ ष द्वारा पुत्री को दिया गया उपदेश हर वधु के लये अनुकरणीय है - 'तुम अपने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बड़ों की सेवा करना , सपन्तियों से सखीभाव रखना , पति से तिरस्कृत होने पर भी कटूवचन न बोलना , सेवको पर उदारवृत्ति रखना, ऐश्वर्य व अ भमान न करना। ऐसी स्त्रियाँ गृहस्वा मनी होती है और वपरीत आचरण वाली कुल कलं कनी।"[११]

भारतीय कथासाहित्य का व श्व साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें रोचक कथाओं के माध्यम से नीति और व्यावहारिक मूल्यों की शक्षा दी गई है। संस्कृत साहित्य में पंचतन्त्र, वृहत्कथा और अन्याय कथासाहित्य ग्रन्थ जीवन मूल्यों के अक्षुण्ण स्त्रोत हैं।

यथा- हितोपदे श में कहा गया है क धैर्य, क्षमा, वाक्पटुता, पराक्रम, यशा भरू च और शास्त्रप्रेम ये श्रेष्ठ व्यक्तियों के सहज गुण हैं।[१२]

भतृहरि कृत नीतिशतक भी एक महत्वपूर्ण नीतिग्रन्थ है, जिसमें उन्होने अपने जीवन के अनुभवों का निचोड प्रस्तुत कया है। नीतिशतक में सुजनता , अर्थ, वद्वता, मुर्खता आदि वषयों का व शद ववेचन मलता है। यथा भतृहरि कहते है क परोपकारी व्यक्ति समृ द्ध में भी वनम्र ही बने रहते है। [१३] अहिंसा, पराया धन नही छीनना , सत्यवचन, समय पर दान देना , स्त्री वषयक वार्तालाप के समय चुप रहना, जरूरतमंदों की पर्याप्त सहायता , गुरूजनों के प्रति वनम्र व्यवहार , जीवों पर दया , शास्त्रों की शक्षाओं का अनुसरण ये जीवन मूल्य कल्याण के मार्ग हैं।[१४]

संस्कृत साहित्य में यम-नियम भी जीवन मूल्यों के रूप में व र्णत हुए हैं। व शेषतः योगदर्शन में इनका वस्तृत ववेचन मलता है। जहाँ इनका सम्बन्ध नैतिक शुद्धता से है। यम निवृत्तिमूलक हैं , वही नियम प्रवृत्तिमूलक।

यम - कायिक, वा चक व मान सक संयम को यम कहते हैं। ये पाँच हैः-

१. अहिंसाः- मन, वचन और कर्म से कसी प्राणी को नुकसान नहीं पहुँचाना। जब व्यक्ति की अहिंसा-पालन में दृढ़ स्थिति हो जाती है, तब उसके आसपास की अहिंसक तरंगों के प्रभाव से उसके आसपास के हिंसक प्रा णयों की भी अहिंसक वृत्ति हो जाती है। भारतीय जैन धर्म में अहिंसा व्रत का पालना कठोरता से कया जाता है। कीट-पतंगों तक की हिंसा से बचा जाता है। संस्कृत साहित्य में अहिंसा को परम मूल्य बताया गया हैः- अहिंसा परमो धर्मः

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 6, June 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

२. सत्यः- मन व वचन में यथार्थ होना , सत्यव्रत का पालन करना और असत्य वाणी से मूक्त रहना। जिस व्यक्ति की सत्यव्रत में दृढ़स्थिति हो जाती है , उसकी वाणी भी प्रामा णक हो जाती है। अर्थात् वह जैसा कहता है, वैसा करता भी है। संस्कृत साहित्य मे व र्णत सत्यवादी राजा हरिश्न्द्र की सत्यप्रतिज्ञता जगत प्र सद्ध है। महाराज यु धष्टिर भी सत्यवादी थे। नीतिग्रन्थों में कहा गया है- 'सत्यं ब्रूयात् प्र यं ब्रूयात्, न ब्रूयात सत्यम प्रयम्।'[१५]

३. अस्तेयः- दुसरे के धन की चोरी न करना और न ही उसकी कामना करना। कसी को अवसर से वं चत करना, उसकी आशा अथवा प्रशन्नता को छीनना, कसी वस्तु को मूल्य से अ धक धन लेक र देना अर्थात् ठगना, प्रकृति का शोषण, पर्यावरण को नुकसान, रिश्वत एवं दहेज की माँग ये सब चोरी है। जिस व्यक्ति की अस्तेय व्रत में दृढ़स्थिति हो जाती है , उसे संसार की कसी चीज का अभाव नहीं रहता। उपनिषद् में अस्तेय का बहुत सुन्दर ढंग से उपदे श दिया गया है- 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'[१६] अर्थात् कसी के धन की लालच मत करों।

४. ब्रह्मचर्यः- मन, कर्म व वचन से इन्द्रियों व शेषतः गुप्तइन्द्रियो में लोलुपता न रखना। जिस व्यक्ति की ब्रह्मचर्य में स्थिति दृढ़ हो जाती है , उसके अन्दर जिज्ञासुओं को ज्ञान प्रदान करने का सामर्थ्य पैदा हो जाता है। वह व्यक्ति ववेकशील हो जाता है।

५. अपरिग्रहः- अपनी आव श्यकता से अ धक धन व भोग सामग्री का संग्रह न करना। इस गुण के अपनाने से समाज में समानता व समाजवाद की स्थापना हो सकती है तथा समाज में कोई वपन्न नहीं रहेगा। ईशोपनिषद् में भी अपरिग्रह का तात्त्विक उपदे श मलता है- तेन त्यक्तेन भुंजिथा [१७] अर्थात् भोग प्रवृत्तियां ईश्वर प्रदत्त हैं, जिनका आदर वरेण्य है, कन्तु उपभोग त्यागपूर्वक ही कया जावे।

नियमः- सदाचार को प्रश्रय देना ही नियम है। यह प्रवृत्तिमूलक है। नियम भी पाँच प्रकार के होते हैं:-

१. शौचः- शौच का अर्थ है- शु द्ध। इसके अन्तर्गत बाह्य व आन्तरिक दोनों प्रकार की स्वच्छता आती है। शरीर, निवास स्थान, भोजन आदि बाहरी वस्तुओं को शुद्ध रखना बाह्य स्वच्छता है और मन में उत्तम वचारों, मैत्री, करूणा, स्नेह आदि से मान सक शु द्ध आती है।

२. सन्तोषः- उ चत प्रयास से जितना मल जाये , उससे सन्तुष्ट रहना। व्यक्ति की जब सन्तोष में पूर्ण स्थिरता हो जाती है , तब उसके आगे सब सांसारिक सुख तुच्छ हो जाते हैं। कबीर ने इसी मनोद शा को इस प्रकार व्यक्त कया है- "जब आवे सन्तोष धन, सब धन धू ल समान।"

३. तपस्याः- भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों को सहन करना। जिस प्रकार लोहे को बार-बार तपाने एवं कूटने से उसके समस्त मल दूर हो जाते हैं , उसी प्रकार तप के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ्य व स्वच्छ हो जाता है।

४. स्वाध्यायः- नियमपूर्वक सत्शास्त्रों का अध्ययन। स्वाध्याय करने से व्यक्ति कभी पथभ्रष्ट नहीं होता और सदैव सन्मार्ग पर बना रहता है।

५. ईश्वर प्र णधानः- ई श्वर में आत्मसर्पण , ई श्वर की भक्ति तथा सम्पूर्ण कर्मो व उनके फल को उसे सम र्पत कर देना ईश्वर प्र णधान कहलाता है। इससे योगी के समस्त वध्न दूर हो जाते हैं।

निष्कर्षः- संस्कृत साहित्य में उदारता , अति थ सत्कार, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, दानशीलता, क्षमा, स्नेह, वनम्रता, करूणा आदि जीवन मुल्य आद्योपान्त भरे पडे हैं। बुद्ध की करूणा , भागवत का प्रेमतत्त्व, राम के द्वारा स्था पत की गई मर्यादा, राजा ब ल की दानशीलता, प्रहलाद की भक्ति भावना और हनुमान का सेवाभाव जैसे उदात्त जीवनमूल्य संस्कृत साहित्य में ही मल सकते हैं। सदियो से भारतीय जनमानस इन मूल्यों से प्रेरणा लेता रहा है। उक्त साहित्यिक जीवन मूल्यों से व श्वभर के मनीषी अपने चरित्र की शक्षा लेते रहे हैं। उक्त वशले षत जीवन मूल्यों के आनुषं गक अन्य भी मानव मूल्य संस्कृत साहित्य में मलते हैं। निःसन्देह इन मूल्यों के संरक्षण एवं परिपालन से मानव जीवन अत्यन्त सुगम , स्नेहिल तथा रसमय बनता है।

सन्दर्भः-

१. नीतिशतक परि शष्ट श्लोक, ३ सम्पादकः डॉ० बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा

२. मनुस्मृति ६.१२

३. नीतिशतक, परि शष्ट श्लोक ३

४. संस्कृति के चार अध्याय पृ.सं. ३७२

५. मनुस्मृति २.७

६. यजुर्वेद ४०.१

७. वही ३६.१८

८. मनुस्मृति ६.९२

९. श्रीमद्भागवत पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर ७.११.८ से १२

१०. रामायण प्रकाशन, गीता प्रेस, गोरखपुर, युद्धकाण्ड १०१.१५

११. अ भज्ञान शाकुन्तलम् चतुर्थ अंक श्लोक १८

१२. हितोपदेश ३२

१३. नीतिशतक ६२

१४. वही ५५

१५. मनुस्मृति ४.३८

१६. वाजसनेही संहिता ४०.१

१७. वही